

कौन बनेगा -

अकलंक . निकलंक

1. अनुयोग चार प्रकार के हैं। प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग और द्रव्यानुयोग।
2. कषाय चौकड़ी चार हैं - अनंतानुबंधी कषाय चौकड़ी, अप्रत्यास्थानावरण कषाय चौकड़ी, प्रत्यास्थानावरण कषाय चौकड़ी और संज्वलन कषाय चौकड़ी।
3. क्षपक श्रेणी के गुणस्थान चार हैं - 8 वाँ अपूर्वकरा, 9 वाँ अनिवृत्तिकरा, 10 वाँ सूक्ष्मसाम्पराय, 12 वाँ क्षीणमोह।
4. आस्तिकाय पांच होते हैं - जीवास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय, धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय।
5. स्थिति पांच होती हैं - ईर्ष्या, भ्राष्ट्रा, लघणा, आदान-निक्षेपण और प्रतिष्ठापन।
6. पांच तीर्थंकर बाल ब्रह्मचारी हैं - 12 वे वासुपूज्य, 19 वे माल्लिनाथ, 22 वे नेमिनाथ, 23 वे पार्वतीनाथ और 24 वे महावीर स्वामी।



7. मुनियों के छह आवश्यक हैं - समता, स्तुति, वंदना, स्वाध्याय, प्रतिक्रमण और प्रत्याख्यान।
8. लेश्याएं छह होती हैं - कृष्ण लेश्या, नील लेश्या, कापोत लेश्या, पीत लेश्या, पद्म लेश्या, शुकल लेश्या।
9. परमाश्रम पाँच हैं। परमोष्ठी पाँच होते हैं। पाप भी पाँच होते हैं। पाँचों परमाश्रमों के स्थिति आचार्य कुन्दकुन्द हैं।
10. छह ढाला में छह ढाल हैं। लेश्याएं छह होती हैं। द्रव्यों की जातियाँ छह हैं। मुनि और साधक के आवश्यक भी छह हैं।
11. तत्त्वार्थसूत्र के स्थिति आचार्य उमास्वामी आचार्य कुन्दकुन्द के शिष्य हैं। समयसार के कर्त्ता आचार्य कुन्दकुन्द विनचन्द्राचार्य के शिष्य हैं। आदिपुराण के स्थिति आचार्य विनसेन आचार्य वीरसेन के शिष्य हैं।
12. गमोकार मंत्र में 35 अक्षर हैं। मोक्षमार्गी प्रकाशक में नौ अक्षर हैं। समयसार में 415 गायत्रियाँ हैं। छह ढाला में छह ढाल हैं। नियमसार में 31 कलश हैं।

DATE

MONTH

YEAR

Mo Tu We Th Fr Sa Su

PAGE

13. आदिपुराण प्रथमानुयोग का ग्रन्थ है। गोम्मटस्यार करणानुयोग का ग्रन्थ है। रत्नकरण्ड श्रावकाचार चरणानुयोग का ग्रन्थ है। प्रवचनस्यार द्वयानुयोग का ग्रन्थ है और मोक्षमार्ग प्रकाशक चारों ही अनुयोगों का ग्रन्थ है।

14. आचार्य के 6 अंतरंग और 6 बहिरंग तप होते हैं। 6 वे तीर्थंकर पद्मप्रभ भगवान हैं। 6 महिला 8 समष्टि में 608 नियम से मोक्ष पाते हैं।

15. आदिनाथ कैलाशपर्वत से, वासुपूज्य चम्पापुरी से, नेमिनाथ गिरनार से, महावीर पावापुर से तथा शीघ 20 तीर्थंकर सम्मेद शिखर से मोक्ष गए।

16.